तो इससे बढ़कर भाग्य भला
हो सकता है क्या और वहाँ ?
यह तुम्हें खोजता हुआ स्वयं,
आया है उलटा सुकृति यहाँ।
तुम चूक गये यह समय कहीं,
तो यही काल बन जाय न, हाँ॥
रस-वञ्चित होकर प्रतिक्रिया,
विष ही विशेष बरसाती है।
यह धरती अचला होने से,
कब साथ किसी के जाती है॥
—मैथिलीशरण गुप्त

चला विनोबा भावे

जन की जर्जर झोपड़ियों में,
जाग्रति, ज्योति जगाता।
गाँव-गाँव की गली गली में,
मोहन-मंत्र सुनाता॥
कोटि-कोटि भारत की जनता में
नवजीवन आया।

क्यों न किसानों की दुनिया में
नव परिवर्तन आवे,
जब बापू के पदचिह्नों पर
चला विनोबा भावे ॥
—श्री अरविन्द

फकीर की पुकार

आज इक फकीर की जो भूमि की पुकार है,
पुकार है यह दीन की, यह देश की पुकार है।
पुकार दीन-हीन की, न अब भुलायेंगे,
भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे ॥ १ ॥
बापू की थी जो कल्पना, वह सत्य की, स्वराज्य की,
यह सत जोड़ने चला, लड़ी वह राम-राज्य की।
सत के कदम पे हम कदम बढ़ायेंगे,
भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे ॥ २ ॥
आज है चतुर्दिशा में गूँज साम्यवाद की,
कत्ल से, कानून से, खूनी क्रान्ति-नाद की।
किन्तु हम तो करुणा का ही पथ बनायेंगे,
भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे ॥ ३ ॥

बाबा, धरती का दे दान
(तर्ज-बाबा सबसे मीठा बोल)

बाबा धरती का दे दान,
कहता यह भूखा भगवान् ॥टेक॥

किसका हक छीन कर चलना,
हक छीना जावेगा अपना ।
छोड़-छोड़ रे मोह-द्रोह सब,
बन अब तो इन्सान ॥ १ ॥

तू भी कर कुछ काम यहाँ पे,
तब पावे आराम यहाँ पे ।
नहीं तो दुख होगा जीवन में,
मान, यह कहना मान ॥ २ ॥

धन औ धरती बँट कर रहेगी,
भूखी जनता अब न सहेगी ।
कहता फिरता सत विनोबा,
सुन तू, देकर कान ॥ ३ ॥

नहीं तो यहाँ तूफान मचेगा,
फिर तो तू क्या, कौन बचेगा ।

पुनीत कर्म के लिए जमीन दो, जमीन दो।
नवीन धर्म के लिए जमीन दो, जमीन दो॥

३

जमीन चाहिए, समाज के समत्व के लिए,
स्वराज्य के लिए, स्वदेश के महत्त्व के लिए।
मनुष्यता के मान के लिए जमीन चाहिए,
बहुत दुखी किसान के लिए जमीन चाहिए॥
नि:स्वत्व दीन के लिए जमीन दो, जमीन दो।
क्षुधार्त विश्व के लिए जमीन दो, जमीन दो॥

४

जमीन दो कि शान्ति से नया समाज ला सकें,
जमीन दो कि राह विश्व को नयी दिखा सकें।
जमीन दो कि प्रेम से समत्व-सिद्धि पा सकें,
जमीन दो कि दान से, कृपाण को लजा सकें॥
सुरम्य शान्ति के लिए जमीन दो, जमीन दो।
महान् क्रान्ति के लिए जमीन दो, जमीन दो॥

—दिनकर

भूमिदान के बिना न होगी, दूर देश की महँगाई।
भूमिदान के बिना न होगी, दूर गरीबी दुखदाई।
भूमिदान के बिना न होगी, दूर अन्न की कठिनाई।
भूमिदान के बिना मिलेंगे, कभी नहीं भाई-भाई।
भूमिदान में छिपे हुए हैं, सब अधिकार हमारे।
भारत के राजदुलारे॥

प्रभु ने देकर जन्म सभी को एक समान सँवारा है।
पृथ्वी, पानी आदि सभी पर, सम अधिकार हमारा है।
भेद-भाव मिट गया, बह रही, विमल प्रेम की धारा है।
भूमिदान दो, भूमिदान दो, यही हमारा नारा है।
सत्य अहिंसा द्वारा होंगे सारे काम हमारे।
भारत के राजदुलारे॥

यही न्याय है, यही कर्म है, यही धर्म की वेला है।
उठो जवानो भूमिदान का, जुडा देश में मेला है।
भूमिदान का यज्ञ सजाने, चला सत अलबेला है।
गाधीजी की भाँति विनोबा भावे चला अकेला है।
पग-पग पृथ्वी नाप रहा है, वामन का तन धारे।
भारत के राजदुलारे॥

—श्यामलाल गुप्त "पार्षद"

दे दो अन्न भूमि अधिकार

दे दो अन्न भूमी - अधिकार
दान करो अभिमान रहित
तो होगा बेड़ा पार ॥ दे दो...

जो खेड़े वह खाये भाया,
संत विनोबा ने है बताया।
जो जोतेगा वह जीतेगा,
और की होगी हार ॥ दे दो...

भूमि-रहित किसान रहेगा,
धरती पर तूफान रहेगा।
दीप अमन का बुझ जायेगा,
फैलेगा अन्धकार।' दे दो...

"लाठी जिसकी भैंस उसीकी",
ऐसी कहावत अब न चलेगी।
दिन चोरी-जोरी के गुजरे,
कहता न्याय पुकार ॥ दे दो...

है सब परमेश्वर की बस्ती,
मेहनत जिसकी उसकी हस्ती।

श्रम का पूजक बनता जाता—
है अब कुल ससार ॥ दे दो .

भूमी का बँटवारा होगा,
मुश्किल आसाँ सारा होगा।
देश में फिर कोई न रहेगा,
भूखा औ' बेकार ॥ दे दो

किसका हक अदा कर देना,
है मालिक की किरपा लेना।
ऋण-मुक्ति मे ही तुम मानो,
होता है उपकार ॥ दे दो

—दुखायल

जो देवोपम है

इस धरती पर लाना है,
इस धरती पर लाना है—
हम खींचकर स्वर्ग, कहीं यदि उसका ठौर-ठिकाना है।
इस धरती पर लाना है ॥
यदि वह स्वर्ग कल्पना ही हो,
यदि वह शुद्ध जल्पना ही हो,

जो-जो था जितना अन्यायी, उसने उतनी भूमि चुरा
कृत-युग में वह भूमि-दान होने आया है आज हली को
माँग रहा है उसे जनार्दन जन बन उसको बलि महान् द
भूमि-दान दो, भूमि-दान दो
कौन ले गया बाँध साथ में मरकर स्वर्ग-नरक तक धरती
न्याय नहीं, भोगो तुम वैभव जब जगती है भूखों मरती
सुन न सको जो करुण पुकारें धरती की ही सुनो गुहारें
'जियो और जीने दो सबको'—धरती यों पुकार है करती
धरती के हैं पुत्र सभी तो धरती से इसका प्रमाण दो
भूमि-दान दो, भूमि-दान दो
मोल लिया तुमने मानव को और बो रही हो तुम चाँदी
इन्हीं अन्न के दानों में है लिखी हुई उनकी बरबादी
सोने के हल दूर हटें गिर, हल लोहे के चले वहाँ फि
सुलझ सकेगी बस 'हल' से ही आज समस्या सीधी सादी
जो समाज का रोग आज है औषधि उसको रामबाण दो
भूमि-दान दो, भूमि-दान दो
धरती है उसकी जो उसको जोत जोत कर दे वसुन्धरा
उसकी नहीं कि जिसने उसको लूट-लूट कर कोष भरा

तुम धरती के सुत वह माँ-सी, करो न उसको अपनी दासी।
सब हिलमिलकर श्रम-जल से कर दो कण-२ तृण-२ हरा-भरा
युग-युग से बंदी धरती को आज यज्ञ में मुक्ति-मान दो।
भूमि-दान दो, भूमि-दान दो!

—सुधीन्द्र

संत विनोबा भावे

गूँज रही भारत में किसकी, अतिशय सुमधुर वाणी,
सुखदायिनि, वरदायिनि, पावनि, मनभावनि, कल्याणी।
वेद, कुरान, उपनिषद, गीता कौन सुनाता आया?
कौन भगीरथ पावन गंगा पुनः बहाता आया!
जन से जन हैं पूछ रहे, पर किसको कौन बतावे,
अन्तरिक्ष से ध्वनि आती है—सन्त विनोबा भावे॥ १॥
हरिश्चन्द्र-सा कौन सत्यव्रती, शिवि, दधीचि-सा त्यागी,
कौन पूज्य गांधी का सहचर, योगी विकट विरागी।
कोमल पद ले कठिन भूमि पर, कौन भ्रमण करता है,
प्रजातन्त्र भू-दान-यज्ञ का कौन सृजन करता है?
शत-शत कंठों से मिल जनता मधुर गान यह गावे,
पवन-गगन-धरती में गूँजा—सन्त विनोबा भावे॥ २॥

तप्त धरा पर कौन सुधा की धार आज बरसाता,
स्वार्थ-निशा मे सुप्त मनुज को आकर कौन जगाता।
सभी मनुज सुत हैं पृथ्वी के, धरणी सबकी माता,
यह वैदिक सन्देश जगत को लाकर कौन सुनाता।
वामन बन बलि की वेदी पर देखो कौन बुलावे?
वह ऋषि है, वह ज्ञानी, दानी, सन्त विनोबा भावे ॥ ३ ॥
भूमिदान दो, भूमिहीन हित, जो हैं तुम्हरे भाई,
करो समर्पण परहित सर्वस्व, यह है बडी कमाई।
लोक और परलोक सुधारो, सब भारत हित धारो,
'भूमिदान का यज्ञ सफल हो', सब मिल यही पुकारो।
चिरजीव हो सन्त हमारा, जन-मन यही मनावे,
साम्ययोग, सर्वोदय वाला—सन्त विनोबा भावे ॥ ४ ॥

—जलेश्वरप्रसाद सिंह

भूमिदान की पुकार

(तर्ज-प्यारा हिंदुस्तान है)

पुकार भूमिदान की, यह देश की, किसान की।
सुजान की, अजान की, यह लहर है तूफान की ॥टेक॥

धन को बाँटने चली. विषमता काटने चली।
बेकारी उच्चाटने चली, है बडी यह काम की ॥ १ ॥
भूख को मिटायेगी, दुख को हटायेगी।
देश के निर्माण में है, राह बडी शान की ॥ २ ॥
हक का खिलायेगी, नेक से चलायेगी।
श्रम के जमाने में भूमि प्यारी प्राण की ॥ ३ ॥
प्यारे भूमि-मालिको, पहचानते हो काल को।
दो साथ भूमिदान का, यह बात है महान् की ॥ ४ ॥
भूमि दो दिल खोल के, अपनी नेकी तोल के।
छोटी-मोटी बात नहीं, यह क्रान्ति है जहान की ॥ ५ ॥
वक्त गमा दोगे तो, आगे धोखा खाओगे।
तुकड्यादास कहता है, बात रानबाण की ॥ ६ ॥

—संत तुकडोजी

इन्कलाब आ रहा

गाँव के जवान जागो, इन्कलाब आ रहा।
तुम पडे रहे, शहर के लोग लूटते रहे,
ग्राम-राज्य के शिखर, हर रोज टूटते रहे।
बात थी स्वराज्य की, वह आपको मिला नहीं,

सात लाख गाँव का हृदय-कमल खिला नहीं।
सामने पड़ा कमान आपको बुला रहा ॥ इन्कलाब
मील औ' मशीन की जो कोठियाँ खड़ी हुईं,
गाँव के शरीर की हैं चोटियाँ गड़ी हुईं।
भारतीय हाथ का कमाल ही चला गया,
भारतीय शान का जमाल ही चला गया।
फिर भी नहीं, जवान का खून कुलबुला रहा ॥ इन्क०
हम शहर के माल से वासना ही छोड़ दें,
हर तरह की लूट का रास्ता ही तोड़ दें।
सगठन हो गाँव का, गाँव ही का माल हो,
फिर गाँव का गरीब जन हर तरह निहाल हो।
गाँव का स्वराज देख, गाँव खिलखिला रहा ॥ इन्क०

—सिद्धभाई

उठो भूमि-पति

उठो भूमिपति जल्दी कर लो,
पुण्य-पर्व की वेला है।
सन्त विनोबा द्वार खड़े हैं,
भूमि-दान का मेला है ॥ १ ॥ उठो०

धन-दौलत सब आये ठगने,
जाता मनुज अकेला है।
ममता-मोह करो फिर कैसा,
दुनिया एक झमेला है ॥ २ ॥ उठो०
अर्थ-विषमता के कारण ही,
मचता आज बवेला है।
साम्ययोग लाने के कारण,
चला सन्त अलबेला है ॥ ३ ॥ उठो०
जल्दी पूरा करो काम को,
नहीं तो उल्टा खेला है।
कोटि-कोटि दलितों की बोली,
कहता सन्त अकेला है ॥ ४ ॥ उठो०

मिट्टी मे सोना उगाते चलो

गीत भूदान के मिलके गाते चलो।
प्रेम की ज्योति घर-घर जलाते चलो ॥ टेक ॥
कोई भूखा न हो, कोई नगा न हो,
बद महलों में यमुना औ' गगा न हो,

सब उठो एक समता की धुन गुनगुना,
इस विषमता के तम को मिटाते चलो ॥१॥ गीत०

जिसके माथे से टपका पसीना नहीं,
वह मनुज सीख पाया है जीना नहीं।
श्रम तो पुरुषार्थ की है कसौटी अरे,
हाथ में धर कुदाली चलाते चलो ॥२॥ गीत०

भूमि तेरी नहीं, भूमि मेरी नहीं,
भूमि माता मनुज की है, चेरी नहीं,
इसलिए उसकी सेवा करो मिल सभी,
और मिट्टी में सोना उगाते चलो ॥३॥ गीत०

सब उठो एक समता की धुन गुनगुना,
इस विषमता के तम को मिटाते चलो,
हाथ मे धर कुदाली चलाते चलो,
और मिट्टी में सोना उगाते चलो।

गीत भूदान के मिल के गाते चलो।
प्रेम की ज्योति घर-घर जलाते चलो ॥४॥

—हरि ठाकुर

सत्य की शिला कभी झुकी नहीं,
न्याय की तुला कभी झुकी नहीं,
क्राति का कदम कभी रुका भी हो–
शाति-साधना कभी रुकी नहीं,
देश के समाज के विकास का—
ग्राम-राज्य का नया विधान है!
राष्ट्र के लिए पुनीत पर्व भूमिदान है!!

—तरुण

दान करो, ओ दानी!

भूमि-यज्ञ हो रहा, भूमि का दान करो, ओ दानी!
वहुत दूर से पैदल चलकर आया स्वय पुजारी,
वेद मत्र हैं पूर्ण कर चुके पूजा की तैयारी,
स्वजन शेष है अभी तुम्हारी शुचि-करुणा का पानी।
भूमि-यज्ञ हो रहा, भूमि का दान करो, ओ दानी!
शाश्वत भला रहा क्या अवनी पर अधिकार किसी का,

मेहनत के पसीने मे डूबा ईमान न टिकने अब देगा।
घर, भोजन, कपड़े की चिन्ता, त्रय ताप हमारे जीवन के,
धन और धरा के सम्बल से श्रमदान न टिकने अब देगा।
जो विघ्न बने मग रोक रहे भूदान-यज्ञ से मुख मोड़े,
उनको तो भावी क्रान्ति का आह्वान न टिकने अब देगा।
अब तक जो भोगा है हमने, अभिशाप गरीबी का 'दीक्षित',
लो सन्त विनोबा भावे का वरदान न टिकने अब देगा।

—रामगोपाल दीक्षित

हवा और पानी-सी धरती

हवा और पानी-सी धरती जन-जन मे बॅट जावे।
महामन्त्र लाये जीवन का सन्त विनोबा भावे॥
सूरज चॉद जहाँ तक चमकें दिशाकाश है घेरे।
छिति-जल-पावक-गगन-समीरा चरनदास किसके रे॥
किसने बॉधा वेग पवन का किसने बॉधा पानी।
आसमान की नीली चादर सबने सिर पर तानी॥
आ-सुमेरु-सागर यह धरती माता-सी जो सोई।
दीवारों से बॉध सकेगा इसे कौन अभिमानी॥
सबको धारण किये धरा जो कौन उसे वर पावे।

गाँव में हँसी-खुशी से गाँव वाले रह सकें,
गाँव को सभी हृदय से अपना गाँव कह सकें।
गाँव की पुकार है, किसान जाग-जाग रे,
जमीन की पुकार है, जवान जाग-जाग रे॥
खोल दे तिजोरियाँ, बाँट दे जमीन को,
जमीन से उठा गले लगा ले दीन-हीन को।
ईमान की पुकार है, इंसान जाग-जाग रे,
जमीन की पुकार है, जवान जाग-जाग रे॥

—खुराज सिंह

गरीबी मिटाने चलो

ऐ गरीबो, गरीबी मिटाने चलो।
गाँव में गाँव का राज लाने चलो॥
भूमिवालों से कह दो कि भूदान दें।
और धनवान सम्पत्ति का दान दें॥
उनको कर्तव्य उनका बताने चलो॥ ऐ गरीबो०
हम सभी को तो ईश्वर ने पैदा किया।
फिर कमाने औ' खाने को साधन दिया॥
भाई-भाई का शोषण मिटाने चलो॥ ऐ गरीबो०

आज दुनिया में हिंसा की आवाज है।
पर यह भारत जो दुनिया का सिरताज है ॥
इसमें बापू की बातें निभाते चलो ॥ ऐ गरीबो०...
यह तपस्या विनोबा की होगी सफल।
इस विषमता की दुनिया को देंगे बदल ॥
देश में प्रेम-समता को लाने चलो ॥ ऐ गरीबो०...
अब जगो, उठ चलो, मत डरो, भाइयो।
साम्य लायेंगे यह प्रण करो, भाइयो ॥
फिर विजय-दुदुभी को बजाने चलो ॥ ऐ गरीबो०..
—पारसनाथ शर्मा

संत विनोबा की बोली में

संत विनोबा की बोली को सुनो सुनो ओ भारतवासी,
इस बोली में बोल रहा है राजघाट का अमर-निवासी।
इस बोली में बोल रहा है आज हमारा सारा दर्शन,
इस बोली में खिंचा हुआ है सारी दुनिया का आकर्षण।
इस दुनिया का, इस धरती का एक नया आकार बोलता,
संत विनोबा की बोली में मानव का अधिकार बोलता ॥

बोलो कब, किसने पाया है हिंसा के पथ से मंजिल को ?
रक्तपातसे जीत सका है, कौन भला कब किसके दिल को ?
किन्तु विश्व के चरण बढ़ रहे महामृत्यु के आलिंगन को,
सर्वनाश के महागर्त में ठेल रहे है जन-जीवन को।
रण-रव की इन हुंकारों के बीच हमारा प्यार बोलता,
तलवारों की झंकारों में एक सुरीला तार बोलता ॥
क्यों काटें तलवारों से हम अपने खाने की रोटी ?
क्यों बदलें, हिंसा-हत्या से हम गरीब की फटी लंगोटी।
इन मसलों का एक और हल, इन मसलों पर, एक और मत,
भूमिदान दो, अर्थदान दो और दान दो अपनी मेहनत,
वर्गहीन भाईचारे को समता का आधार बोलता।
संत विनोबा की बोली में मानव का अधिकार बोलता ॥

—बशीर अहमद खाँ

धन धरती अब बँट के रहसी

रात अंधेरी कट के रहसी।
धन-धरती अब बँट के रहसी ॥
भूखी जनता चुप कद रहसी।
जोर जुलम अब घट के रहसी ॥

मोटी-मोटी तनखा पावै—
क्लर्कां नै दिन भर घुडकावै।
कोठ्या मे टाटा लगवावै।
नींदा रा गुटका सा आवै॥
इसा जुलम अब मिटके रहसी।
धन-धरती अब बँट के रहसी॥

३

जुलमी जुलम घणो मत करिये,
जनता सूँ डरतो ही रहिये।
जनता जद तक भोली भाली,
तू कूदे है डाली-डाली।
जनता दया नहीं फिर जानै,
क्यूँ नी अब यूँ चादर तागै?
अब न गरीबी डर के रहसी।
धन-धरती अब बँट के रहसी॥

—मुकुल

चला आ रहा है

नहीं देखते तुम, तुम्हारा ही कोई
तुम्हीं को बुलाता चला आ रहा है,
रुधिर से बचाकर उषा का सुनहला
सदेशा सुनाता चला आ रहा है।

(१)

जिन्हें नींद घेरे हुए कुम्भकर्णी
उन्हें वह जगाने का व्रत ले चुका है,
जिन्हें जागने पर सताये है आलस
उन्हें वह उठाने का व्रत ले चुका है।
मगर जो न सोये हैं, जागे हुए हैं
खड़े सुस्त जमुहाइयाँ ले रहे हैं,
उन्हें लक्ष्य पाने को कटिबद्ध करके
डगर पर बढ़ता चला आ रहा है॥

(२)

मनुजता के इतिहास मे जगमगाता
नया एक अध्याय जोडा उसीने,